eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Special Issue 03, Nov 2025

सामाजिक विकासः शिक्षा और स्वास्थ्य सुधार

डॉ. मालती वर्मा[1]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, ए०एन०डी० कॉलेज, कानपुर उ0प्र0

Received: 08 November 2025, Accepted: 20 November 2025, Published online: 30 November 2025

Abstract

सामाजिक विकास एक बहुअयामी प्रक्रिया है, जिसका उद्देदश्य व्यक्तियों, समुदायों और संस्थाओं के सम्पूर्ण कल्याण और क्षमता में सुधार करना होता है। शिक्षा और स्वास्थ्य इस विकास के प्रति एक सिक्के के दो पहलू है जिसे कभी भी अभिभाज्य नहीं किया जा सकता है। क्योंकि दोनों में अन्तर्सम्बन्ध बहुत ही घनिष्ठ है। राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ भी भारत की शिक्षा प्रणालियों में एक युगान्तकारी परिवर्तन लाने का उद्देश्य रखती है। जो मुख्य रूप से सम्पूर्ण विकास पर ही बल देता है। यह नीतिगत ढाँचा न केवल शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाने पर जोर देती है। बल्कि विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण को भी शिक्षा का अभिन्न अंग बनाती है। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान कौशल और नैतिकता प्रदान करती है। जबकि स्वास्थ्य मानव को कार्य करने की क्षमता और जीवन की गुणवत्ता प्रदान करती है। भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षा स्वास्थ्य सुधार, सामाजिक न्याय, समानता और समावेशी विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है यह शोधपत्र शिक्षा और स्वास्थ्य सुधार की भूमिका का विश्लेषण करते हुए सामाजिक विकास को गति देने वाले कारकों, चुनौतियों और रणनीतियों का अध्ययन करता है।

कठिन शब्द– अभिभाज्य, अन्तर्सम्बन्ध, आयुष्मान, अन्धविश्वासों, अवैज्ञानिक।

Introduction

किसी भी राष्ट्र के विकास का अर्थ होता है कि सामाजिक विकास का अर्थ केवल आर्थिक वृद्धि या सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में बढ़ोतरी से नहीं लगाया जा सकता। यह एक व्यापक और बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति और समूह के जीवन की गुणवत्ता में सुधार, सामाजिक समानता की स्थापना, और नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के सशक्तिकरण को शामिल किया जाता है। जब किसी समाज में केवल धन–संपदा की वृद्धि होती है लेकिन नागरिकों के बीच असमानता, अशिक्षा, और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बनी रहती हैं, तो उस समाज को वास्तविक रूप से विकसित नहीं कहा जा सकता। अतः सामाजिक विकास का मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीवन जीने के समान अवसर प्राप्त हों और वह समाज के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभा सके। सामाजिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह व्यक्ति–केंद्रित प्रक्रिया है, जिसमें मानव संसाधन का सशक्तिकरण प्रमुख भूमिका निभाता है। इस सशक्तिकरण के दो सबसे आवश्यक साधन हैं कृ शिक्षा और स्वास्थ्य। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान, विवेक, कौशल और मूल्य प्रदान करती है, जिससे वह न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनता है, बल्कि सामाजिक रूप से भी जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित होता है। दूसरी ओर, स्वास्थ्य व्यक्ति को कार्य करने की क्षमता, उत्पादकता और जीवन का आनंद लेने की शक्ति प्रदान करता है। जब समाज के प्रत्येक व्यक्ति को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ प्राप्त होती हैं, तो उस समाज का संपूर्ण सामाजिक ताना–बाना मजबूत होता है। भारत के संदर्भ में देखें तो स्वतंत्रता के बाद सामाजिक

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Special Issue 03, Nov 2025

विकास को एक समग्र राष्ट्रीय लक्ष्य के रूप में स्वीकार किया गया। स्वतंत्र भारत के संविधान में भी शिक्षा और स्वास्थ्य दोनों को मौलिक अधिकारों और राज्य के नीति–निर्देशक सिद्धांतों के रूप में मान्यता दी गई है। सरकार ने समय–समय पर अनेक योजनाएँ और नीतियाँ लागू कीं, जिनका उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को विकास की प्रक्रिया में सम्मिलित करना था।

शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), सर्व शिक्षा अभियान (SSA), और समग्र शिक्षा अभियान जैसी योजनाओं ने बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन प्रयासों से न केवल साक्षरता दर में वृद्धि हुई, बल्कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा का अंतर भी कम हुआ। विशेष रूप से बालिका शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने से समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा मिला। स्वास्थ्य क्षेत्र में भी उल्लेखनीय सुधार हुए हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM), राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM), और आयुष्मान भारत योजना जैसी पहलें गरीब और वंचित वर्गों तक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने में कारगर सिद्ध हुई हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य न केवल रोगों का उपचार करना था, बल्कि निवारक स्वास्थ्य सेवाओं और जागरूकता के माध्यम से समाज में स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करना भी था। इन दोनों क्षेत्रों के समन्वित विकास ने भारत में सामाजिक प्रगति की नींव मजबूत की है। शिक्षा से नागरिकों में जागरूकता बढ़ी, जिससे स्वास्थ्य, स्वच्छता और सामाजिक समानता के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आया। वहीं, स्वास्थ्य में सुधार से लोगों की कार्यक्षमता बढ़ी और वे शिक्षा एवं सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाने लगे। इस प्रकार, शिक्षा और स्वास्थ्य के परस्पर सहयोग से ही वास्तविक सामाजिक विकास संभव हुआ है।

शोध के उद्देश्य

- सामाजिक विकास की अवधारणा और उसमें शिक्षा व स्वास्थ्य सुधार की भूमिका को समझना।
- भारत में शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में हुए सुधारों का विश्लेषण करना।
- सामाजिक असमानता, लैंगिक भेदभाव और ग्रामीण–शहरी अंतर के संदर्भ में शिक्षा व स्वास्थ्य की स्थिति का अध्ययन करना।
- शिक्षा और स्वास्थ्य सुधार के माध्यम से सामाजिक सशक्तिकरण के उपाय सुझाना।

शोध प्रक्रिया – यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। आंकड़ों के स्रोतरू सरकारी रिपोर्टें, नीतिगत दस्तावेज, सर्वेक्षण रिपोर्टें, शोध पत्र, पुस्तकों, पत्रिकाओं एवं ऑनलाइन संसाधनों से प्राप्त सामग्री हैं।

सामाजिक विकास की अवधारणा – सामाजिक विकास एक ऐसी समग्र प्रक्रिया है जो व्यक्ति और समाज दोनों के सर्वांगीण उत्थान को सुनिश्चित करती है। इसका उद्देश्य केवल आर्थिक वृद्धि प्राप्त करना नहीं, बल्कि मानव जीवन की गुणवत्ता, सामाजिक समानता और सामूहिक कल्याण को बढ़ाना है। सामाजिक विकास का मूल केंद्र व्यक्ति का समग्र विकास है– जिसमें उसकी शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा और गरिमामय जीवन के अधिकार शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) के अनुसार, सामाजिक विकास का लक्ष्य "मानव कल्याण और क्षमता–विकास" है। इसका अर्थ यह है कि समाज का विकास तब माना जा सकता है जब उसके प्रत्येक सदस्य को अपनी संभावनाओं को पूर्ण रूप से विकसित करने का

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Special Issue 03, Nov 2025

अवसर मिले। सामाजिक विकास केवल भौतिक या आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह सामाजिक न्याय, समान अवसर, और नैतिक मूल्यों पर आधारित एक न्यायसंगत समाज के निर्माण से जुड़ा होता है।

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में सामाजिक विकास का महत्व और भी अधिक है, क्योंकि यहाँ आर्थिक असमानता, लैंगिक भेदभाव, और सामाजिक विषमता जैसी चुनौतियाँ लंबे समय से मौजूद हैं। इसलिए विकास की प्रक्रिया को समावेशी और न्यायपूर्ण बनाना आवश्यक है।

सामाजिक विकास के प्रमुख घटक हैं–

- शिक्षा का प्रसार: जिससे व्यक्ति में जागरूकता, कौशल और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है।
- स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभता: ताकि हर व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रह सके।
- गरीबी उन्मूलन: जिससे सामाजिक और आर्थिक असमानता को कम किया जा सके।
- महिला सशक्तिकरण: जिससे लैंगिक समानता और सहभागिता सुनिश्चित हो।
- सामाजिक सुरक्षा: जो कमजोर और वंचित वर्गों को सुरक्षा और सम्मानजनक जीवन प्रदान करती है।

शैक्षिक सुधार तथा सामाजिक विकास – शिक्षा किसी भी समाज के विकास और प्रगति का मूल स्तंभ है। यह केवल ज्ञान अर्जित करने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि व्यक्ति में सोचने, समझने, निर्णय लेने और समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने की क्षमता विकसित करने का माध्यम है। शिक्षा व्यक्ति को न केवल रोजगार योग्य बनाती है, बल्कि उसमें सामाजिक चेतना, नैतिकता और लोकतांत्रिक मूल्य भी स्थापित करती है। एक शिक्षित समाज ही सामाजिक समरसता, समानता और स्थायी विकास की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में शिक्षा का महत्व अत्यंत गहरा है। यहाँ शिक्षा केवल आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम नहीं बल्कि सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय विकास की कुंजी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार ने यह समझ लिया कि यदि समाज को सशक्त बनाना है तो शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। इसी दिशा में समय–समय पर कई आयोगों, नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा प्रणाली में सुधार किए गए।

1. राधाकृष्णन आयोग (1948–49):– स्वतंत्रता के तुरंत बाद उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और उद्देश्य निर्धारित करने के लिए इस आयोग का गठन किया गया था। आयोग ने सुझाव दिया कि शिक्षा केवल नौकरी प्राप्त करने का साधन नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह व्यक्ति के नैतिक और आध्यात्मिक विकास का माध्यम बने। इसने विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता, अनुसंधान पर बल, और शिक्षकों की गुणवत्ता सुधार की सिफारिश की।

2. कोठारी आयोग (1964–66):– इस आयोग ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय एकता का सबसे प्रभावी साधन बताया। इसका प्रसिद्ध नारा था– "शिक्षा के बिना कोई राष्ट्रीय विकास संभव नहीं।" आयोग ने 10़23 की शैक्षिक संरचना, समान शिक्षा अवसर, और शिक्षा पर राष्ट्रीय व्यय को GDP का 6% करने की अनुशंसा की। यह रिपोर्ट आज भी भारतीय शिक्षा नीति का आधार मानी जाती है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Special Issue 03, Nov 2025

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और संशोधित नीति 1992:– इन नीतियों ने पहली बार शिक्षा को "राष्ट्रीय विकास की शक्ति" के रूप में परिभाषित किया। इसमें सर्व शिक्षा का अधिकार, महिला शिक्षा, वंचित वर्गों की भागीदारी, और नवीन शिक्षण तकनीकों के उपयोग पर बल दिया गया। नीति ने "समान अवसर" और "शिक्षा की गुणवत्ता" दोनों को समान रूप से महत्वपूर्ण बताया।

4. सर्व शिक्षा अभियान (2001):

21वीं सदी की शुरुआत में प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने के लिए यह ऐतिहासिक कार्यक्रम शुरू किया गया। इसका उद्देश्य था कि 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा मिले। इसके अंतर्गत विद्यालयों की संख्या बढ़ाई गई, शिक्षकों की भर्ती हुई और बालिका शिक्षा के लिए विशेष कार्यक्रम चलाए गए। इससे भारत में साक्षरता दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की संख्या में कमी आई।

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020):– यह नीति भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक क्रांतिकारी बदलाव लेकर आई। इसमें समग्र और बहु–विषयी शिक्षा, कौशल विकास, मूल्य आधारित शिक्षा, और डिजिटल शिक्षण पर बल दिया गया है। नीति ने 5+3+3+4 की नई संरचना प्रस्तुत की जो बाल्यावस्था से लेकर उच्च शिक्षा तक के चरणों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ती है। इसके अतिरिक्त, मातृभाषा में शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण, और अनुसंधान को भी प्राथमिकता दी गई।

स्वास्थ्य सुधार और सामाजिक विकास – स्वास्थ्य मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण आयाम है, क्योंकि एक स्वस्थ व्यक्ति ही समाज और राष्ट्र के विकास में प्रभावी भूमिका निभा सकता है। स्वास्थ्य का अर्थ केवल रोगों से मुक्त होना नहीं है, बल्कि यह शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहने की अवस्था है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने भी 1948 में स्वास्थ्य की यही परिभाषा दी– "स्वास्थ्य केवल बीमारी या दुर्बलता का अभाव नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्ण कल्याण की स्थिति है।" इस दृष्टि से स्वास्थ्य को मानव अधिकार और सामाजिक विकास के आधार के रूप में देखा जाना चाहिए।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में स्वास्थ्य सेवाओं का विकास हमेशा से एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकार ने यह महसूस किया कि यदि नागरिक स्वस्थ नहीं होंगे, तो सामाजिक और आर्थिक प्रगति संभव नहीं होगी। इसी कारण स्वतंत्रता के तुरंत पहले और बाद से स्वास्थ्य सुधारों की दिशा में अनेक प्रयास किए गए।

1. भोर समिति (1946):– भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की संरचना को वैज्ञानिक रूप से व्यवस्थित करने के लिए 'भोर समिति' का गठन किया गया था। इस समिति की रिपोर्ट ने यह स्पष्ट किया कि स्वास्थ्य सेवाएँ प्रत्येक नागरिक का अधिकार हैं, न कि केवल अमीर या शहरी वर्ग का विशेषाधिकार। समिति ने एक एकीकृत स्वास्थ्य सेवा प्रणाली की सिफारिश की, जिसमें प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC) से लेकर जिला और राज्य स्तर तक सेवाओं का नेटवर्क हो। इस रिपोर्ट ने भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली की बुनियाद रखी और आज भी उसके सिद्धांत मार्गदर्शक के रूप में काम करते हैं।

2. राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (2005):– ग्रामीण भारत में स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति चिंताजनक थी– डॉक्टरों की कमी, अस्पतालों की दूरी, और संसाधनों का अभाव। इन समस्याओं के समाधान के लिए 2005

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Special Issue 03, Nov 2025

में "राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM)" की शुरुआत की गई। इसका उद्देश्य था ग्रामीण क्षेत्रों में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार करना, आवश्यक दवाएँ और टीकाकरण सुनिश्चित करना, तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की कार्यक्षमता बढ़ाना। इस मिशन ने आशा कार्यकर्ताओं के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं को गाँव–गाँव तक पहुँचाया और महिलाओं की स्वास्थ्य जागरूकता में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया।

3. आयुष्मान भारत योजना (2018):– भारत सरकार की यह महत्वाकांक्षी योजना विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना के रूप में जानी जाती है। इस योजना के तहत गरीब और वंचित परिवारों को प्रति वर्ष पाँच लाख रुपये तक का निःशुल्क उपचार उपलब्ध कराया जाता है। इसके दो प्रमुख घटक हैं– प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (PM&JAY) और स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र (HWCS)। इसका उद्देश्य था कि कोई भी व्यक्ति आर्थिक कारणों से उपचार से वंचित न रह जाए। इस योजना ने लाखों परिवारों को गंभीर बीमारियों के उपचार में राहत दी और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच को व्यापक बनाया।

4. राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन (2020):– डिजिटल युग में स्वास्थ्य सेवाओं को तकनीक से जोड़ने के उद्देश्य से 2020 में यह मिशन प्रारंभ किया गया। इसके अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को डिजिटल हेल्थ आईडी प्रदान की जा रही है, जिसके माध्यम से व्यक्ति का पूरा स्वास्थ्य रिकॉर्ड सुरक्षित और सुलभ रहेगा। इससे डॉक्टरों और अस्पतालों के बीच समन्वय बढ़ेगा, पारदर्शिता आएगी और स्वास्थ्य सेवाएँ अधिक सटीक और कुशल बनेंगी।

इन नीतियों और सुधारों के परिणामस्वरूप भारत में स्वास्थ्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। मातृ और शिशु मृत्यु दर में कमी आई, जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हुई और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार हुआ। कोविड–19 महामारी के दौरान भी भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली ने बड़ी चुनौतियों का सामना करते हुए डिजिटल स्वास्थ्य, टीकाकरण, और जन–जागरूकता अभियानों के माध्यम से अपनी क्षमता का प्रमाण दिया।

शिक्षा और स्वास्थ्य का पारस्परिक संबंध – शिक्षा और स्वास्थ्य मानव विकास के दो ऐसे स्तंभ हैं जो एक–दूसरे के पूरक हैं। ये दोनों केवल व्यक्ति के जीवन को नहीं, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र के विकास को प्रभावित करते हैं। एक शिक्षित समाज स्वास्थ्य के महत्व को समझता है, जबकि एक स्वस्थ समाज शिक्षा की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से योगदान दे सकता है। इसलिए शिक्षा और स्वास्थ्य के बीच गहरा और परस्पर संबंध है, जो सामाजिक विकास का आधार बनता है।

शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान, विवेक और व्यावहारिक समझ प्रदान करती है। जब व्यक्ति शिक्षित होता है, तो वह स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण और जीवनशैली से जुड़ी आदतों के प्रति अधिक सजग हो जाता है। उदाहरण के लिए, शिक्षित माता–पिता अपने बच्चों के स्वास्थ्य, टीकाकरण, पोषण और स्वच्छता पर अधिक ध्यान देते हैं, जिससे अगली पीढ़ी भी स्वस्थ और सक्षम बनती है। शिक्षा व्यक्ति को वैज्ञानिक दृष्टिकोण देती है, जिससे वह अंधविश्वासों और अवैज्ञानिक उपचारों से बचता है तथा चिकित्सा सेवाओं का सही उपयोग कर पाता है।

दूसरी ओर, स्वास्थ्य भी शिक्षा का आधार है। यदि व्यक्ति शारीरिक या मानसिक रूप से अस्वस्थ है, तो वह शिक्षण प्रक्रिया में प्रभावी रूप से भाग नहीं ले सकता। एक स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क ही शिक्षा ग्रहण करने और उसका उपयोग समाज के हित में करने में सक्षम होता है। विद्यालयों में स्वास्थ्य जाँच,

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Special Issue 03, Nov 2025

पोषण कार्यक्रम, मिड–डे मील योजना आदि इसी सिद्धांत पर आधारित हैं कि बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तो उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा।

भारत में स्वतंत्रता के बाद से शिक्षा और स्वास्थ्य दोनों क्षेत्रों में सुधार के लिए अनेक नीतियाँ और कार्यक्रम लागू किए गए हैं। जैसे सर्व शिक्षा अभियान (2001) ने सभी के लिए प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य निर्धारित किया, वहीं राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (2005) ने ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएँ सुलभ कीं। इन दोनों के सम्मिलित प्रभाव से समाज में जागरूकता, स्वच्छता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना बढ़ी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी स्वास्थ्य और शिक्षा के इस संबंध को मान्यता दी है। इसमें विद्यालयों में जीवन–कौशल शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान, शारीरिक गतिविधियाँ, योग और खेलकूद को अनिवार्य किया गया है। इसका उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि बच्चों में संतुलित और स्वस्थ जीवनशैली विकसित करना है। इसी प्रकार आयुष्मान भारत योजना (2018) और राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन (2020) जैसे कार्यक्रमों ने नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने का प्रयास किया, जिससे वे शिक्षा और रोजगार के अवसरों का बेहतर उपयोग कर सकें।

शिक्षा और स्वास्थ्य का यह द्विपक्षीय संबंध सामाजिक समानता और विकास की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि समाज में शिक्षा की पहुँच बढ़ती है, तो स्वच्छता, पोषण और स्वास्थ्य के स्तर में सुधार स्वतः होता है। वहीं जब स्वास्थ्य सेवाएँ सुदृढ़ होती हैं, तो स्कूलों में उपस्थिति दर बढ़ती है और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आता है।

अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण – फिनलैंड, क्यूबा और जापान जैसे देशों ने यह सिद्ध कर दिया है कि किसी भी राष्ट्र का वास्तविक विकास केवल आर्थिक वृद्धि से नहीं, बल्कि शिक्षा और स्वास्थ्य के समान व सशक्त निवेश से संभव होता है। इन देशों के अनुभव बताते हैं कि जब समाज अपने नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करता है, तब वह न केवल समृद्ध बल्कि न्यायसंगत और संतुलित भी बनता है। भारत जैसे विकासशील देश इन देशों के अनुभवों से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

फिनलैंड को विश्व में सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली के लिए जाना जाता है। वहाँ शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि समान अवसर और सामाजिक न्याय का उपकरण माना जाता है। 1970 के दशक में फिनलैंड ने शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार किए कृ शिक्षा को पूरी तरह निःशुल्क बनाया, शिक्षकों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए कठोर प्रशिक्षण प्रणाली अपनाई, और परीक्षा–आधारित शिक्षा के स्थान पर सीखने पर केंद्रित दृ ष्टिकोण को प्रोत्साहित किया। वहाँ प्रत्येक शिक्षक मास्टर डिग्री धारक होता है और शिक्षक–व्यवसाय को समाज में अत्यंत सम्मान प्राप्त है। इसके अतिरिक्त, फिनलैंड में प्रारंभिक शिक्षा से ही विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, जीवन–कौशल और सामाजिक मूल्यों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। परिणामस्वरूप, वहाँ शिक्षा में असमानता नगण्य है और छात्रों में तनाव का स्तर बहुत कम पाया जाता है। यह मॉडल दिखाता है कि शिक्षक–प्रशिक्षण और समान अवसर किसी भी समाज के बौद्धिक विकास की नींव हैं।

क्यूबा स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में विश्व का एक उदाहरणीय राष्ट्र है। सीमित आर्थिक संसाधनों के बावजूद वहाँ स्वास्थ्य सेवाएँ पूरी तरह निःशुल्क और सार्वभौमिक हैं। 1959 की क्रांति के बाद, क्यूबा सरकार ने स्वास्थ्य को नागरिक अधिकार घोषित किया और प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल पर विशेष ध्यान दिया। देश में डॉक्टर–जनसंख्या अनुपात विश्व में सबसे बेहतर है, और प्रत्येक नागरिक तक स्वास्थ्य सेवा पहुँचाने के

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Special Issue 03, Nov 2025

लिए फैमिली डॉक्टर सिस्टम लागू किया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की रिपोर्ट के अनुसार, क्यूबा की जीवन प्रत्याशा लगभग 79 वर्ष है– जो कई विकसित देशों के समान है। वहाँ बाल मृत्यु दर भी अत्यंत कम है। यह सफलता इस तथ्य को रेखांकित करती है कि जब स्वास्थ्य को शिक्षा के साथ सामाजिक नीति का अभिन्न हिस्सा बनाया जाता है, तो समाज की समग्र भलाई सुनिश्चित होती है।

जापान ने शिक्षा और स्वास्थ्य दोनों क्षेत्रों में एक सशक्त संतुलन स्थापित किया है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, जापान ने अपने राष्ट्र निर्माण की रणनीति में मानव संसाधन विकास को केंद्र में रखा। शिक्षा प्रणाली में अनुशासन, नैतिकता, तकनीकी ज्ञान और सामूहिक उत्तरदायित्व को प्राथमिकता दी गई। साथ ही, वहाँ सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को इस तरह विकसित किया गया कि हर नागरिक को प्राथमिक से लेकर विशेष चिकित्सा तक समान पहुँच मिले। जापान में "स्कूल हेल्थ प्रोग्राम" जैसी पहलें बच्चों के पोषण, टीकाकरण और मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देती हैं। इन पहलों के परिणामस्वरूप, जापान न केवल उच्च साक्षरता दर वाला देश बना, बल्कि वहाँ की जीवन प्रत्याशा (लगभग 84 वर्ष) विश्व में सबसे अधिक है। इस प्रकार शिक्षा और स्वास्थ्य के संयोजन ने जापान को एक अत्यंत उत्पादक और अनुशासित समाज में परिवर्तित किया है।

नीतिगत सुझाव

- शिक्षा और स्वास्थ्य में सरकारी व्यय को ळक्च् के न्यूनतम 6% और 3% तक बढ़ाया जाए।
- ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों और डॉक्टरों की तैनाती के लिए प्रोत्साहन योजना बनाई जाए।
- डिजिटल शिक्षा और टेलीमेडिसिन के माध्यम से दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँच बनाई जाए।
- स्कूलों में स्वास्थ्य जांच और पोषण योजनाओं को अनिवार्य किया जाए।
- शिक्षा में जीवन कौशल, मानसिक स्वास्थ्य और नैतिक शिक्षा को शामिल किया जाए।

सामाजिक विकास का आधार शिक्षा और स्वास्थ्य हैं। जब कोई समाज अपने नागरिकों को शिक्षित और स्वस्थ बनाता है, तो वह न केवल आर्थिक रूप से बल्कि नैतिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप से भी समृद्ध होता है। भारत में शिक्षा और स्वास्थ्य सुधारों ने उल्लेखनीय प्रगति की है, परंतु चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। यदि इन दोनों क्षेत्रों में समन्वित और सतत प्रयास किए जाएँ, तो भारत एक न्यायसंगत, शिक्षित और स्वस्थ समाज के रूप में विश्व में उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. शर्मा आर०, भारत में शिक्षा और स्वास्थ्य नीतियों को तुलनात्मक विश्लेषण, नयी दिल्ली, सेज पब्लिकेशन 2021

2. लाल रमन बिहारी, भारत के शैक्षिक प्रणाली का विकास, रस्तोगी पब्लिकेशन्स,

3. पाण्डेय राम शकल, भारत के शिक्षा व्यवस्था का विकास, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, 2017

4. विश्व स्वास्थ्य संगठन का संविधान, जनेवा 1948

5. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, मानव विकास प्रतिवेदन न्यूर्याक 2023

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Special Issue 03, Nov 2025

6. दुबे मनीष, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2014

7. भारत सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मन्त्रालय, नयी दिल्ली, 2020

8. भारत सरकार आयुष्मान भारत योजनाः नीतिगत रूपरेखा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय, नयी दिल्ली, 2018

9. राष्ट्रीय नमूना कार्यालय, गृहस्थ स्वास्थ्य व्यय रिपोर्ट, भारत सरकार।